

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी में साम्प्रदायिक चेतना

सुचिस्मिता दास

सहायक शिक्षिका

बेनाचिटी भारतीय हिंदी हाई स्कूल, पश्चिम बंगाल

शोध सारांश:

राष्ट्रवाद को सामान्यतः देशभक्ति का पर्याय माना जाता है। परंतु यही राष्ट्रवाद जब उग्र रूप धारण कर लेता है, तो यह सांप्रदायिक वैमनस्य जैसी आपदा से हमें त्रस्त करता है। राजनीति की बुराइयाँ जब धर्म को प्रभावित करती हैं, तो इसका दुष्परिणाम समाज को झेलना पड़ता है। प्रेमचंदोत्तर हिंदी साहित्य, खासकर कहानी में इसी त्रासदी की चर्चा मिलती है। जहाँ, विभाजन जैसे भीषण परिणाम को दर्शाया गया है। साथ ही धार्मिक दंगे एवं आपसी मनमुटाव तथा हिंसा की वारदातों की भी चर्चा है। परंतु भारतवर्ष की जड़ें, जिसे सर्वधर्म सद्भाव के जल से सींचा गया है वह कभी सांप्रदायिक चेतना के आगे घुटने नहीं टेकेंगी। हम कभी आपसी प्रेम एवं सौहार्द को पूरी तरह भूल नहीं सकते। यही बात हमें कृष्णा सोबती, मोहन राकेश, कमलेश्वर, विष्णु प्रभाकर, राजी सेठ, नासिरा शर्मा, अमृतराय, अज्ञेय, महीप सिंह, बदीउज्जमाँ आदि की कहानियों में आश्वासन के रूप में नई राह दिखाती है। यहाँ हम मंटो एवं इस्मत चुगताई की मूल उर्दू कहानियों के हिंदी अनुवाद के प्रभाव को भी झुठला नहीं सकते, जो कि हिंदी साहित्य पर एवं समाज पर गहरी छाप छोड़ती है।

बीज शब्द :

राष्ट्रवाद, उग्र राष्ट्रवाद, सांप्रदायिक वैमनस्य, विभाजन, मानवीय संवेदना, साहित्य एवं सांप्रदायिक चेतना, आपसी, प्रेम सौहार्द, सम्मान, सहनशीलता

वर्तमान समाज में हम राष्ट्रवाद के बढ़ते प्रभाव को देख सकते हैं। यह राजनीति के गलियारों से होकर आम जनता तक अपना प्रभाव विस्तार करता है। राष्ट्रवाद से सामान्य तौर पर देश, समाज या विश्व को कोई प्रत्यक्ष खतरे नहीं हैं। परन्तु यही राष्ट्रवाद जब उग्र रूप धारण कर लेता है तो उसका खामियाजा हर किसी को भरना पड़ता है। इसी उग्र राष्ट्रवाद से संबंधित एक सामाजिक कोढ़ है- साम्प्रदायिक वैमनस्य। साम्प्रदायिक भेद-भाव जब राष्ट्रीयता के साथ मिलकर विकराल रूप धारण कर लेता है तब उसके क्या परिणाम हो सकते हैं ये हम सभी भारत-पाकिस्तान विभाजन की त्रासदी के रूप में वर्षों से देख-सोच-समझ रहे हैं। देश-विभाजन के घाव इतने गहरे और पीड़ादायक हैं कि साम्प्रदायिकता के दुष्परिणाम देखने हेतु हमें और कहीं नहीं जाना पड़ेगा।

साहित्य सदा से समाज एवं मानवीय संवेदना से जुड़ा है अतः वह भी इस साम्प्रदायिकता के प्रभाव से अछूता नहीं है वहीं दूसरी ओर इस पीड़ा से बाहर आने के लिए आशा-आश्वासन तथा प्रेरणा देने का काम भी साहित्य ने बखूबी किया है। प्रेमचन्द के पश्चात् हिन्दी कहानी-जगत् में साम्प्रदायिक चेतना को लेकर लिखने वाले कई कथाकार हैं। प्रस्तुत आलेख में हम हिन्दी के कुछ चुनिंदा कथाकारों के माध्यम से साम्प्रदायिक चेतना के विविध पहलुओं पर चर्चा करेंगे।

साम्प्रदायिक चेतना को लेकर बुनी गयी कहानियों में कृष्णा सोबती की - 'मेरी माँ कहाँ', सिक्का बदल गया; मोहन राकेश की - 'मलबे का मालिक'; भीष्म साहनी की - 'अमृतसर आ गया है', विष्णु प्रभाकर की - 'मेरा वतन'; कमलेश्वर की - 'कितने पाकिस्तान'; राजी सेठ की 'किसका इतिहास'; नासिरा शर्मा की - 'सरहद के इस पार'; अमृत राय की 'व्यथा का सरगम'; अज्ञेय की 'शरणदाता' आदि उल्लेखनीय हैं। इसके अलावा - उपेन्द्रनाथ अशक - 'चारा काटने की मशीन', द्रोणवीर कोहली - 'बेजबान', बदीउज्जमाँ - 'अंतिम इच्छा', श्रवण कुमार - 'मामूली लोग', मीरा सीकरी 'सच्ची सच', महीप सिंह - 'पानी और पुल', स्वदेशी दीपक - 'रफूजी' आदि हैं।

जैसे कहानी एवं कहानीकार भी साम्प्रदायिक-चेतना को काफी संवेदनशील तरीके से व्यक्त करते हैं। इनके साथ हम उर्दू के लेखक सआदत हसन मंटो एवं इस्मत चुगताई को भी नहीं भूल सकते जो उर्दू के लेखक होते हुए भी अपनी अनुदित रचनाओं के माध्यम से हिन्दी पाठकों को प्रभावित करते हैं। साम्प्रदायिक कट्टरता एवं भेद-भाव समाज में विभाजन से काफी पूर्व भी वर्तमान था परन्तु विभाजन के ठीक पहले उग्र राष्ट्रवाद के झूठे आदर्शों ने इस आग को हवा दे दी। कृष्णा सोबती की कहानी मेरी माँ कहाँ में इसी राष्ट्रवाद की झलक मिलती है-

“वह तो अपने नए वतन की आजादी के लिए लड़ रहा था। वतन के आगे कोई सवाल नहीं, अपना कोई ख्याल नहीं ! ... यह सब किसके लिए ? वतन के लिए ? काम के लिए और.. ? और अपने लिए ! नहीं उसे अपने से इतनी मुहब्बत नहीं ! क्या लम्बी सड़क पर खड़े यूनस खाँ दूर-दूर गाँव में आग की लपटें देख रहा है ... वह देखकर घबराता थोड़े ही है घबराये क्यों आजादी बिना खून के नहीं मिलती, क्रान्ति बिना खून के नहीं आती, और, और इसी क्रान्ति से तो उसका नन्हा-सा-मुल्क पैदा हुआ है!”¹

लेकिन इस आजादी के साथ जो तबाही आयी उससे किसी का भला न हुआ- “सड़क के किनारे-किनारे मौत की गोदी में सिमटे हुए गाँव, लहलहाते खेतों के आस-पास लाशों के ढेर। कभी कभी दूर से आती हुई ‘अल्ला-हो-अकबर’ और हर-हर महादेव की आवाजें।”²

मोहन राकेश की कहानी ‘मलबे का मालिक’ में अब्दुल गनी जब साढ़े सात साल बाद लाहौर से अमृतसर अपना पुराना घर देखने आता है दो उसे निराशा ही हाथ लगती है- “पूरे साढ़े सात साल के बाद लाहौर से अमृतसर आए थे। हाकी का मैच देखने का तो बहाना ही था, उन्हें ज्यादा चाव उन घरों बाजारों को फिर से देखने का था, जो साढ़े सात साल पहले उनके लिए पराए हो गये थे।”³

“मुसलमानों के एक-एक घर के साथ हिन्दुओं के भी चार-चार, छह-छह घर जलकर राख हो गए। अब साढ़े सात साल में उनमें कई इमारतें तो फिर से खड़ी हो गई थी, मगर जगह-जगह मलबे के ढेर अब भी मौजूद थे। नई इमारतों के बीच-बीच में मलबे के ढेर अजीब ही वातावरण प्रस्तुत करते थे।”⁴

गनी मियाँ को अपने घर के मलबे में बदल जाने का भी उतना दुःख नहीं हुआ जितना अपने ही मुहल्ले में छोटे बच्चों को प्यार न कर पाने का हुआ। जब वह एक बच्चे को प्यार से कुछ थमाने जा रहा था उसके साथ की बड़ी लड़की ने कहा- “चुप कर, मेरा वीर! रोएगा तो तुझे मुसलमान पकड़ कर ले जाएगा।”⁵

यह सुनकर गनी मियाँ को बहुत दुःख हुआ कि अब वह अपने ही गली मुहल्ले के बच्चों को प्यार नहीं कर सकता।

विष्णु प्रभाकर की कहानी ‘मेरा वतन’ में विभाजन की त्रासदी भी है क्रोध भी है- “अमृतसर में साढ़े तीन लाख मुसलमान रहते थे, पर आज एक भी नहीं हैं।”

“हाँ” उसने कहा, “वहाँ आज एक भी मुसलमान नहीं है।” काफिरों ने सबको भगा दिया, पर हमने भी कसर नहीं छोड़ी। आज लाहौर में एक भी हिन्दू या सिक्ख नहीं है और कभी होगा भी नहीं।”⁶

पर इसके बावजूद भी अपने वतन, अपनी मिट्टी (अमृतसर) के प्रति मोह और प्रेम नहीं छूटता। एक तरफ जहाँ साम्प्रदायिक अलगाव और टकराव के विध्वंसक परिणाम हमारे सामने आते हैं वहीं इन्हीं कहानियों के जरिये साम्प्रदायिक सद्भाव, आपसी प्रेम एवं सहयोग की भावनाएँ भी सामने आती हैं- अज्ञेय की कहानी ‘शरणदाता’ में- “हिन्दुस्तान पाकिस्तान की अनुमानित सीमा के पास के एक गाँव में कई सौ मुसलमानों ने सिक्खों के गाँव में शरण पायी।... दो ढाई-सौ आदमी किरपानें निकालकर उन्हें घेरे में लेकर स्टेशन पहुँचा आये। किसी को कोई क्षति नहीं पहुँची।...”⁷

‘मलबे का मालिक’ में अब्दुल गनी जब साढ़े सात साल बाद अपने घर को देखने आया तो उसे पता चला कि उसके बेटे, बहु और दोनों पोतियों को किसी ने मार डाला और घर को ढहा दिया। फिर भी उसके मन में कड़वाहट की जगह आशा ही है। जिस रक्खे पहलवान ने उसका घर उजाड़ा, उसी के पास अनजाने में जाकर गनी मियाँ कहते हैं- “तुम लोग उसके पास थे, सब में भाई-भाई की सी मुहब्बत थी, अगर वह चाहता तो तुममें से किसी के घर में नहीं छिप सकता था ? ... रक्खे! उसे तेरा बहुत भरोसा था।”⁸

“जी हल्कान न कर, रक्खिया। जो होनी थी, सो हो गई। उसे कोई लौटा थोड़े ही सकता है।... मेरे लिए चिराग नहीं, तो तुम लोग तो हो।... मैंने तुमको देख लिया, तो चिराग को देख लिया। अल्लाह तुम लोगों को सेहतमंद रखे। जीते रहो और खुशियाँ देखो!”⁹

कुछ ऐसा ही विश्वास हमारे मन में जगता है जब ‘मेरी माँ कहाँ’ का यूनस खाँ एक काफिर बच्ची को बचाता है।

“यूनस खाँ के हाथों में बच्ची ... और उसकी हिंसक आँखें नहीं, उसकी आर्द्र आँखें देखती है दूर कोयटे में एक सर्द, बिल्कुल सर्द शाम में उसके हाथों में बारह साल की खूबसूरत बहिन नूरन का जिस्म...”¹⁰

“एक अपरिचित बच्ची के लिए क्यों घबराहट है उसे घ वह लड़की मुसलमान नहीं हिन्दू है, हिन्दू है।”¹¹

“काफिर ... यूनस खाँ के कान झनझना रहे हैं, काफिर ... काफिर ... क्यों बचाया जाए इसे? काफिर?... कुछ नहीं ... मैं इसे अपने पास रखूँगा !”¹²

मन में प्रेम और द्वेष की जंग में जीत मासूम प्यार की होती है।

कृष्णा सोबती की कहानी ‘सिक्का बदल गया’ में शाहजी और शाहनी दशकों से अपने इलाके में सर उठाकर

जीते हैं। वे लोगों को पैसे उधार देते हैं और सुख-दुःख में उनका ध्यान भी रखते हैं। समय बदलता है अब काफी अरसे से शाहनी के सम्मान में कोई कभी नहीं आती। पर अब बँटवारे के साथ ही लोगों ने शाहनी को दूसरे मुल्क भेजने की बात तय कर ली। शोरा तो दोस्तों की बातों में आकर शाहनी को हटाकर हवेली की दौलत हड़पने की बात सोचने लगा था। पर शाहनी की शांत आवाज सुनकर- "शोरा शाहनी का स्वर पहचानता है। वह न पहचानेगा। अपनी माँ जैना के मरने के बाद वह शाहनी के पास ही पलकर बड़ा हुआ। उसने पास पड़ा गंडाशा शाटाले के ढेर के नीचे सरका दिया।"¹³

फिर "शाहनी उठ खड़ी हुई। किसी गहरी सोच में चलती हुई शाहनी के पीछे-पीछे मजबूत कदम उठाता शोरा चल रहा है। शंकित सा इधर-उधर देखता जा रहा है। अपने साथियों की बातें उसके कानों में गुंज रही हैं। पर क्या होगा शाहनी को मारकर?"¹⁴

गाँव से जाते समय शाहनी सोचती है- "कौन नहीं है आज वहाँ ? सारा गाँव है, जो उसके इशारे पर नाचता था कभी। उसकी असामियाँ हैं जिन्हें उसने अपने नाते-रिश्तों से कभी कम नहीं समझा। लेकिन नहीं, आज उसका कोई नहीं, आज वह अकेली है। यह भीड़ की भीड़, उनमें कुल्लूवाल के जाट। वह क्या सुबह ही न समझ गयी थी?"¹⁵

फिर भी उसके मन में किसी के लिए कड़वाहट नहीं। उसका प्रेम उसकी सहजता को देखते हुए गाँव वालों का दिल भी रो पड़ता है - "शाहनी ने उठती हुई हिचकी को रोककर रूँघे-रूँघे गले से कहा, रब्ब तहानू सलामत रखे बच्चा, खुशियाँ बरसे ...। वह छोटा-सा जनसमूह रो दिया। जरा भी दिल में मैल नहीं शाहनी के। और हम, हम शाहनी को नहीं रख सके।"¹⁶

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी कहानी में जहाँ साम्प्रदायिकता की जड़ों को टटोला है वहीं आपसी प्रेम एवं सौहार्द में इस समस्या का हल भी पाया है। हमारे देश में सर्वधर्मसद्भाव की जो प्राचीन परम्परा है वह इन तात्कालिक तूफान के झोंकों से मिट नहीं सकती।

परन्तु साम्प्रदायिक चेतना की बात केवल विभाजन तक ही सीमित नहीं है। वैमनस्य की यह आग रह रहकर भड़क उठती है। इसका एक कारण यह है कि साम्प्रदायिक विद्वेष का राजनीतिकरण किया जाता है। जिन्हें इससे लाभ लेना होता है, वे सदा लाभांशित रहते हैं- पीड़ित तो बेकसूर भोले-भाले लोग ही होते हैं। हानि उनकी भी होती है जो मार्ग भटक कर धर्मांध बनकर अपने ही घर में आग लगा देते हैं।

स्वदेशी दीपक की कहानी 'रफूजी' में विभाजन से लेकर 1984 के हिन्दु-सिख दंगों की भी बात कही गयी है- "अंग्रेज जाते-जाते बँटवारा करा गये और विरासत में एक शब्द दे गये- रिफ्यूजी। जैसा कुछ वर्ष पहले हमारी महारानी मरी और विरासत में एक शब्द दे गयी-उग्रवादी।"¹⁷

"चौरासी में जब दिल्ली में दंगे हुए थे, तो इन्दर हिन्दुओं के खिलाफ सरेआम बोलता था न। तब भी हमने समझाया, लेकिन नहीं माना न। हिन्दुओं ने ही ईंट मारकर उसका सिर फोड़ दिया था।"¹⁸

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानियों के माध्यम से हम यह समझ पाते हैं कि एक दूसरे के प्रति सम्मान, सहनशीलता एवं संवेदना की भावना ही हमारे बीच सद्भाव बनाये रख सकती है। समय आ गया है कि साहित्य की इसी भावना को हम जीवन में उतारकर स्वस्थ साम्प्रदायिक चेतना का विकास करें।

संदर्भ :

1. सोबती, कृष्णा, <http://gadyakosh.org/gk/> मेरी माँ कहाँ / retrieved on April 1st, 2017.
2. वही।
3. राकेश, मोहन, <http://gadyakosh.org/gk/मलबे> माँ मालिक / retrieved on April 1st, 2017
4. वही।
5. वही।
6. http://hindisamay.com/kahani/Vibhajan_ki_kahaniya/mera20vatan.htm, retrieved on April 2nd, 2017
7. http://hindisamay.com/kahani/Vibhajan_ki_kahaniya/mera20vatan.htm, retrieved on April 2nd, 2017
8. राकेश, मोहन, <http://gadyakosh.org/gk/मलबे> का मालिक / retrieved on April 2nd, 2017.
9. वही।
10. सोबती, कृष्णा, <http://gadyakosh.org/gk/> मेरी माँ कहाँ / retrieved on April 1st, 2017.
11. वही।
12. वही।
13. सोबती, कृष्णा, सिक्का बदल गया <http://gadyakosh.org/gk> retrieved on April 1st, 2017.
14. वही।
15. वही।
16. वही।
17. http://hindisamay.com/kahani/Vibhajan_ki_kahaniya/refugee.htm, retrieved on April 2nd, 2017.
18. वही।